लंगूरों की विलुप्ति की खबरें

सिफाका नामक एक प्राइमेट संभवतः पिछली 2 सदियों में पहला प्राइमेट होगा जो धरती से हमेशा के लिए विदा हो जाएगा। विश्व संरक्षण संघ के प्राइमेट विशेषज्ञ समूह की एक ताज़ा रिपोर्ट में यही आशंका व्यक्त की गई है। वैसे रिपोर्ट का आकलन है कि समस्त प्राइमेट प्रजातियों में से करीब एक-तिहाई विलुप्ति की कगार पर हैं। संघ के प्रजाति अस्तित्व आयोग ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि यदि जल्दी कुछ न किया गया तो विश्व की कुल 394 प्राइमेट प्रजातियों में से 114 खतरे में होंगी। आखरी बार किसी प्राइमेट जंतु की विलुप्ति की खबर सन 1700 में आई थी। उस समय ज़ीनोथ्रिक्स नाम का जंतु धरती से रुखसत हो गया था। यह कापुचिन बंदर से मिलता-जुलता प्राणी आखिरी बार जमैका में देखा गया था।

विश्व संरक्षण संघ का मत है कि शायद सिफाका इस मामले में न तो अकेला है, न शायद सर्वप्रथम होगा। इससे भी दुर्लभ प्राइमेट्स हैं। जैसे वियतनाम का सुनहरी सिर वाला लंगूर और चीन का हाइनान गिबन दोनों ही एक-एक दर्ज़न से ज़्यादा नहीं बचे हैं। इनके अलावा, श्रीलंका का हॉर्टन प्लेन्स का दुबला-पतला लोरिस भी 1937 के बाद मात्र 4 बार देखा गया है। और इन सबसे दुर्लभ प्राइमेट तो रेड कोलोबस बंदर है। यह आइवरी कोस्ट और घाना में पाया जाता था। इसे 2000 में विलुप्त घोषित कर दिया गया था मगर इसके बाद एक बार एक अकेला गिबन दिख गया, तो इसके जीवित होने की आशा बंधी है।

आखिर ये जंतु इतनी तेज़ी से विलुप्ति की राह पर क्यों बढ़ रहे हैं? विश्व संरक्षण संघ की रिपोर्ट के अनुसार इनके अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा यह है कि जंगल कटते जा रहे हैं, इनके अंगों का गैर-कानूनी व्यापार बदस्तूर जारी है और इनका मांस काफी लोकप्रिय है।

प्राइमेट्स की सबसे जोखिमग्रस्त 25 प्रजातियों में से 11 एशिया में, 7 अफ्रीका में, एक मेडागास्कर में और तीन दक्षिण अमरीका में पाई जाती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***